SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

कथा साहित्य और डॉ. सुधा अरोड़ा : परिचयात्मक दृष्टि

श्रीमती रंजना संजय, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
श्रीमती रंजना संजय, शोधार्थी, हिन्दी साहित्य,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर,
जिला ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 02/12/2019
Revised on : -----
Accepted on : 06/12/2019
Plagiarism : 01% on 02/12/2019

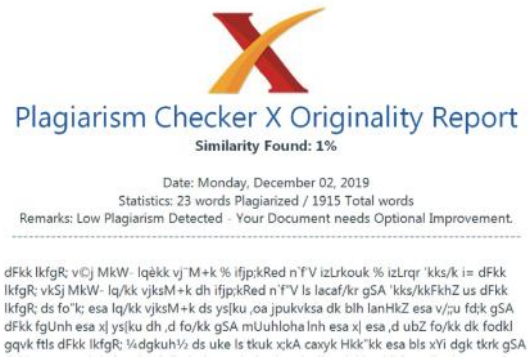
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, December 02, 2019
Statistics: 23 words Plagiarized / 1915 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

dFkk lkfgR; v©j MkW- lqèkk vj¨M+k % ifjp;kRed n'f'V izLrkouk % izLrqr 'kks/k i= dFkk lkfgR; vkSj MkW- lq/kk vjksM+k dh ifjp;kRed n'f'V ls lacaf/kr gSA 'kks/kkFkhZ us dFkk lkfgR; ds fo"k; esa lq/kk vjksM+k ds ys[ku ,oa jpukvksa dk blh lanHkZ esa v/;;u fd;k gSA dFkk fgUnh esa x| ys[ku dh ,d fo/kk gSA mUuhloha lnh esa x| esa ,d ubZ fo/kk dk fodkl gqvk ftls dFkk lkfgR; ¼dgkuh½ ds uke ls tkuk x;kA caxyk Hkk"kk esa bls xYi dgk tkrk gSA

प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध पत्र कथा साहित्य और डॉ. सुधा अरोड़ा की परिचयात्मक दृष्टि से संबंधित है। शोधार्थी ने कथा साहित्य के विषय में सुधा अरोड़ा के लेखन एवं रचनाओं का इसी संदर्भ में अध्ययन किया है। कथा हिन्दी में गद्य लेखन की एक विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य में एक नई विधा का विकास हुआ जिसे कथा साहित्य (कहानी) के नाम से जाना गया। बंगला भाषा में इसे गल्प कहा जाता है। कथा ने अंग्रेजी से हिंदी तक की यात्रा बंगला के माध्यम से की। कथा, गद्य साहित्य का एक अन्यतम भेद तथा उपन्यास से भी अधिक लोकप्रिय साहित्य का रूप है। मनुष्य के जन्म के साथ ही साथ कथा का भी जन्म हुआ और कथा कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण से प्रत्येक सभ्य तथा असभ्य समाज में कहानियाँ पाई जाती हैं। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लंबी और सम्पन्न परंपरा रही है।

मुख्य शब्द :–

कथा साहित्य, सामाजिक।

कथा साहित्य विषय मानव जीवन का सार है मानव का जीवन एक पहेली के समान है एक ऐसा रहस्य है जिस रहस्य को खोलने में गद्य हमेशा सफल रहा है। मानव के जीवन के रहस्य को खोलने कथा साहित्य को मानव जीवन और जगत का चित्रण करना पड़ता है। अतः मानव और साहित्य का अटूट संबंध होता है साहित्य के द्वारा मानव जीवन के बारे में जो बात प्रस्तुत होती है वह समाज की वास्तविक अभिव्यक्ति होती है।

डॉ. सुधा अरोड़ा की कहानियां : एक परिचय :–

कथाकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता सुधा अरोड़ा

हमारे समय का एक जाना–पहचाना नाम है ! लेखन इनके लिए जुनून तो है ही मिशन भी है ! सुधा जी के लेखन में निरंतर ताजगी दिखाई देती है ! समकालीन मुद्दों पर उनके लेखन की पक्षधरता अचंभित करती है ! बुत जब बोलते है उनकी ताजा कहानियों को संकलन है ! सुधा अरोड़ा की कहानियां शाश्वत् मूल्यों के साथ–साथ समकालीन परिस्थिति से संवाद भी करती चलती हैं और अपने को निरंतर बदलते समाज से जोड़े रखती है–कुरीतियों और अवमूल्यन के खिलाफ बेबाक–बयानी करती हुई और सच समर्थन में अपनी आवाज बुलंद करती हुई ! इन कहानियों के पत्र विविध वर्गों से आते हैं ! यहाँ स्त्रियों के अलावा मूक कामगार भी है, मौन बालश्रमिक भी और जटिल सामाजिक विसंगारियों से जूझती बुजुर्ग और युवा स्त्रियाँ भी !

सुधा अरोड़ा की कहानियां देह–विमर्श की तीखी आवाजों के बीच स्त्री जीवन के किसी मार्मिक हिस्से को अभिव्यक्त करती कर्णप्रिय लोकगीत–सी लगती हैं ! इनका उद्देष्य घरेलू–हिंसा और पुरुष की व्यावहारिक व मानसिक क्रूरता के आघात झेल कर ठूंठ हो चुके स्त्री मन में फिर से हरितिमा अंखुआने और जीवन की कोमलता उभारने की संवेदना का सिंचन करना है ! उधड़ा हुआ स्वेटर कहानी को खुले मन से मिली पाठकों की स्वीकृति साबित करती है कि ऐसी संवेदनात्मक कहाँनियों का लिखा जाना कितना जरूरी है ! इन कहानियों में लेखिका दर्दमंद स्त्रियों की दरदिया बनकर अगर एक हाथ से उनके घाव खोलती है तो दूसरे हाथ से उन्हें आत्मसाक्षात्कार के अस्त्र भी थमाती है जिससे ये स्त्रियाँ भावनात्मक आघात और संत्रास से टूटती नहीं बल्कि मजबूत बनती हैं ! राग देह मल्हार की बेनू और भागमती पंडाइन का उपवास की भागमती ऐसी ही स्त्रियाँ हैं जिनका स्वर व्यंग्यात्मक और चुटीला होते हुए भी संवेदना को संजोये रहता है !

औरत : दो चेहरे :–

डॉ. सुधा अरोड़ा ने बेहद खूबसूरती से औरतों के दो चेहरों का सृजन अपनी इस कहानी में किया है प्रस्तुत कहानी के अंश से यह स्पष्ट हो जाता है।

पहला चेहरा–(शादी के पाँच साल बाद) –रहोगी तुम वही :–

यह कहानी (रहोगी तुम वही) मानसिक यातना या इमोशनल अब्यूज से गुजरती स्त्री के बारे में सब जानते हैं यह एकालाप कथा उसी स्थिति को दर्शाती है। अक्सर एक स्त्री को उसके किए किसी काम को शाबासी मिलना तो दूर की बात, उसे बात बेबात हर चीज पर उलाहने दिए जाते हैं। उस पर बाल्यवाण दर्शाए जाते हैं। सतही तौर पर देखने पर यह रोजमर्रा की स्थितियों की हास्य–व्यंग्य की छटा बिखेरती हुई एक पति के औसत संवादों की कथा लग सकती है पर इसके एक औरत की जिंदगी में कितने दूरगामी घातक परिणाम हो सकते हैं। यह भी चिंतन का मुद्दा है। वैज्ञानिक मानक का आधार ले तो यह माना हुआ तथ्य है कि कान से सुनने और दिमाग तक उस आवाज के पहुंचने के हिस्से के साथ–साथ ही सोचने समझने यानी प्रज्ञा का हिस्सा जुड़ा है।

घर के किसी व्यक्ति का निरंतर कानों पर ध्वनि का प्रहार करते रहना सुनने वाले व्यक्ति के सोचने समझने और विश्लेषण करने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। पिछले आलेख की बात को यहां दोहराया जा सकता है कि दिमाग पर निष्क्रिय होने की चोट अन्ततः दिमाग को निष्क्रिय और संज्ञाहीन बनाकर की छोड़ती है।

अगर चार दशकों के अंतराल में फैली कहानयों में से एक प्रिय कथा चुनने के लिए कहा जाए तो मैं इस कथा को बेहिचक चुन लूंगी। इसके पीछे बहुत से कारण है। एक सीधा कारण तो यही कि बारह साल की लम्बी चुप्पी के बाद डॉ. सुधा अरोड़ा ने यह कथा लिखी थी कई बार लेखक के मानसिक अवरोध के चलते कलम दंडे बस्ते में चली जाती है।

रहोगी तुम वही कहानी के कुछ अंश प्रस्तुत हैं–क्या यह जरूरी है कि तीन बार घंटी बजने से पहले

दरवाजा खोला ही न जाए? ऐसा भी कौन सा पहाड़ काट रही होती हो। आदमी थका–माँदा ऑफिस से आए और पाँच मिनट दरवाजे पर ही खड़ा रहे ..... इसे घर कहते हैं ? यहाँ कपड़ों का ढेर, वहाँ खिलौनों का ढेर। इस घर में कोई चीज सलीके से रखी नहीं जा सकती ? ....उफ! इस बिस्तर पर तो बैठना मुश्किल है, चादर से पेशाब की गंध आ रही है। यहाँ– वहाँ पोतड़े सुखाती रहोगी तो गंध तो आएगी ही ... कभी गद्दे को धूप ही लगवा लिया करो, पर तुम्हारा तो बारह महीने नाक ही बन्द रहता है, तुम्हें कोई गंध–दुर्गन्ध नहीं आती। .....

उधड़ा हुआ स्वेटर :–

ये सुधा अरोड़ा जी की पाठक को बांधने वाली कहानी है। कहानी का कथानक, लेखिका की सोच, प्रकृति से दूर अभिजात वर्ग के लोगों की कहानी जिसमें अंग्रेजी के शब्दों का अच्छा प्रयोग लेखिका द्वारा किया गया है।

काँच के इधर उधर :–

लेखिका को बंबइया अंदाज के दो पहलवानों से पाला पड़ा। मक्खी काँच के आर पार दिखती रोशनी से धोखा खाकर, बाहर खुले में निकल भागने की कोशिश में बार बार काँच के दरवाजे से टकरा जाती। बाजू की बिल्डिंग से निकाले षहद को लेकर अंतर्द्वन्द्व की एक कहानी है।

सुधाजी ने कहानी के साथ–साथ उपन्यास विधा में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उनके चर्चित उपन्यास है –

1. यही कहीं था घर
2. यह रास्ता उसी अस्तपाल को जाता है।

यही कहीं था घर – यह उपन्यास कोलकाता के एक मध्यमवर्गीय पंजाबी घर–तनेजा परिवार की कहानी पर आधारित है। जो विशाखा की नजर से ऑकी जाती है। विशाखा हर घटना हर निर्णय हर मान्यता पर सवाल खड़ी करती है। यह उपन्यास स्त्री–जीवन में प्रवेश करती दो लड़कियों की कहानी है जो बचपन से पुरुषों की कुदृष्टि और वासना का शिकार होती हैं परन्तु उनके विरुद्ध बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाती हैं।

पितृसत्तात्मक से पूरी तरह घिरे हुए उस घर का सुधा अरोड़ा जी ने सजीव चित्र खींचा है। जहां मां नियमित रूप से मूक रहकर बच्चे पैदा करती है फिर उनकी हर आवश्यकताओं को हर संभव पूरा करने को अपनी तकदीर मान लेती है। संवेदनशील विशाखा न तो माँ जैसा जीवन जीना चाहती है और न ही अपने परिवार की उन मान्यताओं को अपनाना चाहती है जिसके चलते घरवाले उसकी बहिन को बलि के बकरे की तरह विवाह करने के लिए दिन–रात तैयार करने में लगे रहते हैं।

यह राता उसी अस्पताल को जाता है :–

यह सुधाजी का दूसरा उपन्यास है इस उपन्यास में लेखिका ने प्रेमविवाह की त्रासदी का वर्णन किया है। इस उपन्यास में प्रेम विवाह करने वाली चित्रा, उसके पति दिवाकर और बेटे की तनावपूर्ण कहानी है। चित्रा माता–पिता की मर्जी के खिलाफ प्रेम विवाह करती है। लेखिका ने पहले उपन्यास में पिता के मर्जी से शादी करने वाली सुजाता के जीवन का चित्रण किया है। यहां चित्रा प्रेम विवाह करके खुद को असमर्थ पाती है। माता–पिता के कभी समाप्त न होने वाले झगड़े मोनू को मानसिक रोगी बना देते हैं। उपन्यास के अंत में चित्रा मोनू पर ध्यान देने के लिए शायद दिवाकर को छोड़ देगी ऐसा लगता है मगर इसका कोई भी समाधान उसे नहीं मिल पाता है।

सुधाजी की कहानी और उपन्यास के अलावा, 'आम औरत : जिंदा सवाल', 'एक औरत की नोटबुक', इनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं। 'ऑड मैन आउट उर्फ बिरादरी बाहर' एकांकी प्रकाशित हो चुकी है। 'वामा'

(जनसत्ता), 'औरत की दुनिया' कथादेश जैसे लोकप्रिय स्तंभ लेखन का कार्य किया। इसके अलावा कई पत्रिकाओं में उनके अनेक स्तंभ लेख प्रकाशित हुए हैं।

औरत की कहानी (2008) :–

औरत की कहानी में औरत की जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट कहानियों का सम्पादन सुप्रसिद्ध कथाकार सुधा अरोड़ा द्वारा किया गया है– औरत की कहानी में औरत की जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट कहानियों का सम्पादन सुप्रसिद्ध कथाकार सुधा अरोड़ा द्वारा किया गया है। इस संग्रह में सम्मिलित हैं महाश्वेता देवी, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, उर्मिला पवार, मृदुला गर्ग, मृणाल पांडे, राजी सेठ, नासिर शर्मा, चित्र मुदगल, ज्योत्स्ना मिलन, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, नमिता सिंह, कमलेश बक्षी, रमणिका गुप्ता, एवं सुधा अरोड़ा की कहानियाँ।

इस दौर की कवियत्रियों नें न केवल औरत के जीवन पर गहन दृष्टि डाली है, वरन् एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी औरत को रखकर देखा है। जिस तरह 90 के दशक के बाद भूमंडलीकरण की विचार धारा ने बाजार वाद को बढ़ाया दिया है। इसके परिणाम स्वरूप समाज में औरत की बनी–बनाई छवि परिवर्तित हुई। जिसने औरत को देखने का एक अलग नजरिया विकसित किया। जहां एक तरफ आजादी के बाद आयी आधुनिकता ने स्त्री जीवन को स्वतंत्र और आत्म–निर्भर बनाया वहीं दूसरी तरफ उदारीकरण के फलस्वरूप एक खासवर्ग की औरत को उच्छृंखल बनाने का कार्य किया है।

निष्कर्ष :–

समकालीन कवियत्रियों ने परिवार संस्था का विरोध भी दिखाई देता है जो झूठ की बुनियाद पर टिका हुआ है। अनेक कविता प्रेम संबंधों पर लिखी गई है, जिनमें रोमांस और अब दोनों का चित्रण दिखाई देता है। इसके अतिरिक्त आलोचना के क्षेत्र में भी कई लेखिकाएं सक्रिय हैं, जिनमें निर्मला जैन, अनुराधा, सुधा अरोड़ा आदि प्रमुख नाम हैं।

सुधा अरोड़ा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अवलोकन करने के पश्चात् ज्ञात होता है कि आप एक सचेत, दृष्टिसंपन्न रचनाकार हैं आप बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। आपने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के ज्वलंत समस्याओं को हमारे समक्ष बड़ी ही बखूबी से प्रस्तुत किया है। आपने स्त्री जीवन की पीड़ा को नई दृष्टि से पाठकों के समक्ष उकेरा है। बचपन में माता–पिता का साहित्य में रुझान, राजेन्द्र यादव जी का सान्निध्य एवं माता–पिता के सहयोग एवं स्नेह के कारण ही वे एक सफल रचनाकारों की पंक्ति में खड़ी हुईं।

सुधा अरोड़ा जी कई कहानियां, उपन्यास, काव्य, एकांकी, आलेख, स्तंभ लिखकर यह साबित कर दिया कि उनकी सोचने, समझने एवं तर्कशक्ति का कोई सानी नहीं हैं।

सुधा अरोड़ा जी स्वयं स्त्री होने के कारण नारी की पीड़ा से भली–भांति परिचित हैं। एक महिला रचनाकार यदि स्त्री हो तो बहुत ही महत्वपूर्ण बात होती है। सुधा अरोड़ा जी ने कामकाजी, शिक्षित, महानगरीय स्त्रियों का अपनी रचनाओं में विस्तृत वर्णन किया है। सुधा जी ने अपने कृतियों में नारी की पीड़ा को उजागर करते हुए उसकी संवेदना के हरेक पहलू को छुआ है। आपकी स्त्री जीवन पर केन्द्रित कहानियां अनमोल हैं।

सुधा जी वर्तमान के स्त्री के हर सवाल से स्वयं जूझती हैं और अपनी रचनाओं में उन्हें उतारने का प्रयत्न करती हैं। सुधा जी की कहानियों में समाज, राष्ट्र एवं पारिवारिक जीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *अरोड़ा सुधा, बगैर तराशे हुए (कहानी संग्रह), इकाई प्रकाशन, इलाहाबाद।*

2. *अरोड़ा सुधा, स्त्री शक्ति की भूमिका से उठते कई सवाल (विमर्श), स्त्रीकाल पत्रिका।*
3. *डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, बीसवी शताब्दी, हिन्दी साहित्य नए संदर्भ।*
4. *डॉ. शंभूनाथ सिंह, (1956), हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप–विकास, प्रथम संस्करण।*
5. *अरोड़ा, सुधा, एक औरत की नोटबुक (कथा विमर्श), मानव प्रकाशन, कोलकाता।*
6. *अरोड़ा सुधा, रहोगी तुम वही (कहानी संग्रह), रेमाधव पब्लिकेशंस प्रा.लि., नोएडा।*
7. *अरोड़ा सुधा, भागमती पंडाइन का उपवास यानी करवाचौथ पर भरवां करेले, बुत जब बोलते हैं, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।*
8. *अरोड़ा सुधा, काला शुक्रवार (कहानी संग्रह), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।*
9. *अरोड़ा सुधा, एक औरत : तीन बट्टा चार (कहानी संग्रह), बोधि प्रकाशन, जयपुर।*
10. *अरोड़ा सुधा, 21 श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।*

****